Jai Maa Saraswati Gyandayini ISSN: 2454-8367
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer Reviewed, Open Access & Indexed)
Web: www.jmsjournals.in Email: jmsjournals.in@gmail.com
Vol. 3, Issue-IV
April 2018
Impact Factor : 4.032 (IIJIF) UGC Approved e-Journal No. - 43919 e-ISJN: A4372-3118

शेखावाटी क्षेत्र की जल धरोहर पर लगे इतिहास लेखन के स्त्रोत : एक अभिलेखीय अध्ययन

हरलाल सिंह[1]
डॉ. मंजु गुप्ता[2]

शोध–संक्षिप्तिका

शेखावाटी भारतवर्ष के राजपूताना के जयपुर राज्य का अधीनस्थ प्रान्त रहा है। राव शेखा व उसके वंशजों द्वारा स्थापित तथा शासित इस अंचल की एक अलग समृद्ध संस्कृतिक परम्पराएं व इतिहास है। जो पुरातात्विक, साहित्यिक सामग्री के अलावा यात्रा वृत्तान्तों व जनश्रुतियों के रूप में क्षेत्र में प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है। शेखावाटी की ऐतिहासिक सांस्कृतिक परम्पराओं के प्रांगण में जल धरोहर या विरासत निर्माण की अलग ही परम्परा रही है। जिसमें क्षेत्र के ***कुएं, बावड़ियां, जोहड़, तालाब, कुण्ड, बांध, टांके*** *इत्यादि सम्मिलित है।*

यद्यपि शेखावाटी की जल धरोहर के इतिहास लेखन की साहित्यिक सम्पदा अल्प मात्रा में ही प्राप्त होती है। परन्तु इस जल विरासत की दीवारों, स्तम्भों, शिलाओं व छतरियों में पुरातत्व महत्व की एवं इतिहास लेखन की सर्वाधिक विश्वसनीय अभिलेख सम्पदा स्थित है। जिसके आधार पर केवल जल धरोहर का ही नहीं वरन् शेखावाटी के सम्पूर्ण इतिहास लेखन में भरपूर सहायता मिलती है। जल विरासत पर लगे ये अभिलेख शिलाओं, चट्टानों, फलकों व कीर्ति स्तम्भों पर खुदे हुए हैं। जिनसे उस जल धरोहर से सम्बद्ध इतिहास, कला, संस्कृति, समाज, धर्म व उनसे जुड़ी परम्पराओं के बारे में जानकारी देने के पुख्ता गवाह हैं।

शिला व छतरियों में लिपिबद्ध अभिलेखीय स्त्रोत झुन्झुनूं स्थित रामसागरजी कुएं पर मिलते हैं। चट्टान पर लिखे गये लेख खण्डेला स्थित सोनगरी बावड़ी में प्राप्त होते हैं। शिलाफलकों पर लिखे गए लेख रामगढ़ स्थित अणतरामजी का जोहड़, फतेहपुर का घड़वा जोहड़, सीकर का माधवसागर तालाब, पौंख का हरिनारायणजी का तालाब, खेतड़ी स्थित सेठ पन्नालाल शाह का तालाब, सलेदीपुरा का बांध, खण्डेला स्थित बहुजी, माजी सा व द्रोपदी की बावड़ी आदि स्थलों सें प्राप्त होते हैं। जिनमें जल धरोहर के निर्माता, निर्माण वर्ष, निर्माण का उद्देश्य जैसी कई इतिहास लेखन की महत्वपूर्ण व पूर्वाग्रहरहित जानकारी उपलब्ध है। सलेदीपुरा के बांध पर स्थित शिलाफलक में कछवाहों की नरवर शाखा के सोढ़देव से लेकर आमेर राज्य के उदयकरणजी व उनके पुत्र व पोत्रों की अमरसर व खण्डेला के नरेशों की सूची दी गई है जो राजपूताने के इतिहास लेखन में अति महत्वपूर्ण है।

1. शेखावाटी के कुओं पर लगे लेख

शेखावाटी के स्थापनाकाल के पूर्व से ही इस क्षेत्र में पेयजल व सिंचाई के स्त्रोत मुख्यतः कुएं ही रहे हैं। जिनकी स्थापना यहां के किसी भी नगर, शहर, कस्बे, ग्राम या ढ़ाणियों के बसने से पूर्व ही हो जाती थी। जिन पर

[1] पीएच.–डी. शोधार्थी व राजीव गांधी नेशनल रिसर्च फैलो, इतिहास व भारतीय संस्कुति विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर।
[2] एसोसियेट प्रोफेसर, इतिहास विभाग, राजकीय कन्या महाविद्यालय, टोंक।

इनके निर्माणकर्त्ताओं द्वारा कुएं की शिलाओं, छतरियों व शिलाफलकों पर उत्कीर्ण किए गए लेख प्राप्त होते हैं। जिनसे इनके सम्बन्ध में इनके निर्माता, निर्माणवर्ष, उद्देश्य व तत्कालीन सामाजिक–धार्मिक महत्व की परम्पराओं व संस्कृति पर यथेष्ट प्रकाश पड़ता है। अभिलेखीय स्त्रोतों से सम्पन्न शेखावाटी के कुछ कुओं पर अवस्थित सामग्री का विवरण यहां प्रस्तुत किया जा रहा है। जो निम्नानुसार है–

1.1 रघुनाथगढ़ स्थित चंदेल कालीन कुएं का लेख–

यह कीर्ति स्तम्भ लेख है जो रघुनाथगढ़ कस्बे के मध्य स्थित एक पुरानी धर्मशाला से पश्चिमोत्तर दिशा में अवस्थित चंदेल कालीन कुएं पर विद्यमान है। इसके दक्षिणी भाग के कोने पर दो कीर्ति स्तम्भ स्थापित किए हुए हैं। जिसमें पहला स्तम्भ कूप निर्माण की प्रारम्भिक अवस्था का द्योतक है। दूसरा स्तम्भ कुएं के जीर्णोद्धार के समय का है। कीर्ति स्तम्भ की प्रथम पंक्ति में ''संवत् 1150 काति सुदी 13'' उत्कीर्ण है। इसके नीचे की तीन पंक्तियों में पूरा लेख उत्कीर्ण है। परन्तु अक्षरों की अपनी विशिष्ट शैली को हम पढ़ नहीं पाएं हैं।

बिसाऊ से प्रकाशित ***वरदा*** शोध पत्रिका में स्व. झाबरमल शर्मा ने 'शेखावाटी के शिलालेख' नाम से एक लेख लिखा था। उसमें खोह (रघुनाथगढ़) के इस कुएं वाले कीर्ति स्तम्भ लेख का उल्लेख करते हुए उन्होंने इसे सांभर नरेश महाराजाधिराज पृथ्वीराज प्रथम के शासनकाल में चंदेल शासक द्वारा निर्माण के समय उत्कीर्ण कराया गया माना था।[3] डॉ. दशरथ शर्मा ने अपनी कृतियों में इसे चौहान महाराजा पृथ्वीराज प्रथम के पिता महाराजा विग्रहराज तृतीय का विक्रम संवत् 1155 में विद्यमान होना माना है।[4]

1.2 नरहड़ स्थित नरीवाला कुआं का लेख–

नरहड़ शेखावाटी के प्राचीन स्थलों में से एक है। जिसे नागड़ पठानों ने आबाद किया था। यह पिलानी के समीप स्थित है। यहां स्थित नरहड़ के नरीवालों के कुएं पर बनी एक छोटी छतरी के भीतरी भाग में एक लेख अंकित है। यह शिलालेख नरहड़ के नागड़ पठानों के शासनकाल के वि. सं. 1563 में निर्मित एक कूप निर्माण की स्मृति में उत्कीर्ण किया गया है।

सुरजन सिंह शेखावत ने इस लेख का आशय अपनी कृति 'शेखावाटी के शिलालेख : एक अध्ययन' में इस प्रकार निकाला है कि संवत् 1563 (विक्रमी) की फागण बदी 2 को यह कुआ बनवाया गया। बनाने वाले का नाम इस प्रकार पढ़ा जाता है– ''चौधरी नरपला सहससुत सढ़डै'' जिसका सही पाठ सम्भवतया चौधरी नरपाल सारड़ा हो सकता है। नरहड़ के लोगों से ऐसा सुना है कि पहले माहेश्वरी वैश्यों के जिनमें सारड़ा शाखा वाले प्रमुख थे– अनेक परिवार यहां बसते थे। उन्हीं में से चौधरी नरपाल नामक व्यक्ति ने उक्त कूप का निर्माण कराया होगा।[5]

1.3 फतेहपुर स्थित जादू के कुएं का लेख– फतेहपुर में स्थित जादू के कुएं पर स्थित मूल लेख निम्नानुसार है–

> ''संवत् 1717 वर्षे शालिवाहण शाके 1582 माह बदी 5 गुरू दिने दिलीपति पातिशाह अवरंगसाह राज्ये फतेहपुर मध्ये क्यामखां वंशे दी. श्री ताहरखां तत्पुत्र दीवान श्री अलिफखां सानी राज्ये महेशरी जाति बीहाणी साह प्रियागदास तत्पुत्र साह मथुरादास तत्पुत्र साह जादोंदास श्री कृष्ण प्रीत्यर्थे कूप कर वायो।। श्री शुभ भवतु।। सं. 1071।। श्री।। उसता छाजू खुदाईबक्स।। श्री रस्तु।।[6]

---

[3] वरदा, श्रावणी 2002 विक्रमी, 'शेखावाटी के शिलालेख' पं. झाबरमल शर्मा ।

[4] शर्मा, दशरथ, अर्ली चौहान डायनेस्टीज, पृ. सं. 37 व चौहान सम्राट पृथ्वीराज तृतीय और उनका युग, पृ. सं. 12।

[5] शेखावत, सुरजनसिंह, प्रथम संस्करण, 1988 : शेखावाटी के शिलालेख–एक अध्ययन, पृ. सं. 61।

[6] दिनमणि, श्रीगोपाल, विक्रमीं संवत् 2002 : फ़तहपुर–परिचय, फ़तहपूर–शेखावाटी, पृ. सं. 75–76।

उपर्यंकित कूप निर्माण के स्मृति लेख में उल्लेख है कि संवत् 1717 शालिवाहन शाके 1582 के किसी माह की कृष्ण पक्ष की पंचमी, वार गुरूवार के दिन दिल्ली के सम्राट बादशाह औरंग़ज़ेब के राज्य फ़तेहपुर के मध्य में क्यामखां वंश शासन कर रहा है। उसी वंश के ताहिरखां के पुत्र दीवान अलिफ़खां सानी के शासन में वैश्य महेश्वरी जाति के बिहाणी गौत्र के प्रयागदास के पुत्र शाह मथुरादास व उनके पुत्र शाह जादोदास ने भगवान श्री कृष्ण के प्रति समर्पण की भावना से कुएं का निर्माण करवाया।

1.4 झुन्झुनूं स्थित रामसागर कुएं का लेख–

झुन्झुनूं में चौहान काल में जोड़ राजपूतों का आधिपत्य था। सन् 1451 ई. में मुहम्मदखां ने झुन्झुनूं नगर को सुव्यवस्थित ढंग से पुनः बसाकर वहां अपनी नवाबी की स्थापना कर झुन्झुनूं को अपनी राजधानी कायम की। यहां के अंतिम नवाब रूहेलाखां की मृत्यु के बाद सन् 1730 ई. में शार्दुलसिंह शेखावत यहां के शासक बने।[7] झुन्झुनूं शहर की परिधि में अनेक जल धरोहर विद्यमान हैं। उनमें कुआं रामसागर झुन्झुनूं कस्बे के उत्तरी भाग में बना हुआ है। कुएं का निर्माता वैश्य भगवानदास रामदास अग्रवाल बंसल गोती है। उक्त निर्माण कार्य झुन्झुनूं के नवाब मोहम्मद सआदतखां के शासनकाल में हुआ है। कुएं के ढ़ाणे पर लगी एक शिला पर तथा कुएं के चौपड़े के कोने पर बनी एक छोटी छत्री में कुएं के बनाए जाने के सम्वत् मिति और तिथि के द्यौतक दो लेख खुदे हुये हैं। यद्यपि लेख स्पष्ट रूप से पढ़ने में नहीं आया है फिर भी उनका जितना अंश पढ़ा जा सका है उसे नीचे उद्धृत किया जा रहा है–

1.4.1 कुएं की ढ़ाणे की शिला का लेख– ''संवत् 1737 मी (ति) सहवद 5 सोम– रामसागर कुवः भगवानदास रामदास कसराई सुभ भवत।''[8]

1.4.2 छतरी में लेख– एक पार्श्व में– ''श्री औरंगजेब पादसाह श्री श्री द (दी) वान सीईदजी कामखानी..... झुंझुनूं संवत् 1739 मी. मगसर बदी 13 छतरी .. कारीगर खनसी..।।'' उसके सामने के दूसरे पार्श्व में– ''श्री स.....वती संवत् 1737 मी. माह बद 5 श्री रामसागर कुव की ..... भगवानदास रामदास अग्रवाल बांसल गोती।''[9]

उपर्यंकित रामसागर कुएं के लेखों का आशय यह है कि सम्राट औरंग़ज़ेब के शासनकाल में और झुन्झुनूं के नवाब दीवान सआदतखां के राज्य में बंसल गोती अग्रवाल वैश्य भगवानदास रामदास ने सं. 1737 वि. की माह बदी 5 कुआं रामसागर खुदाना और बनाना प्रारम्भ किया और सं. 1739 वि. मिति मगसर बदी 13 को काम समाप्त हुआ तब यह छतरी बनाई जिसके कारीगर खनसी या खानसी थे।

1.5 कासली के कूप निर्माण का लेख–

सीकर से लगभग 11 किलोमीटर की दूरी पर कासली ग्राम स्थित है। कासली शेखावाटी का प्राचीन गांव है जहां ग्यारहवीं शताब्दी में सांभर के चौहान राजाओं के भाई–बन्धुओं की निजी आजीविका की जागीरें थी। विक्रम संवत् 1100 के पश्चात् किसी समय में चंदेल राजपूतों का राज्य स्थापित हुआ। जिन्हें खण्डेले के राजा रायसल ने

---

[7] आर्य, एच. एस., द्वितीय संस्करण, 2013 : शेखावाटी का राजनैतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, पंचशील प्रकाशन, फिल्म कॉलोनी, जयपुर, पृ. सं. 83–84

[8] अनुसंधान यात्रा के दौरान स्वयं द्वारा संकलन।

[9] पूर्वोक्त ही।

हराकर मुगल सम्राट अकबर से कासली के परगने को अपनी वतन की जागीर के रूप में प्राप्त किया था।[10] यहां एक प्राचीन कुएं पर एक अभिलेख मिला है। इस लेख के सम्बन्ध में सुरजन सिंह शेखावत लिखते हैं कि यह लेख 23 पंक्तियों में अंकित है परन्तु आरम्भ की चार पंक्तियों का पाठ स्पष्ट रूप से पठनीय नहीं है। प्रथम पंक्ति में ''श्रीरामजी समत'' अंकित है। द्वितीय, तृतीय एवं चतुर्थ पंक्तियों के अक्षर स्पष्ट रूप से पढ़े व समझे नहीं जा सके हैं। शेखावतजी द्वारा प्रस्तुत कुएं के लेख का मूल पाठ यहां उद्धृत किया जा रहा है। जो इस प्रकार है–

> ''1717 साल मीती मीग (सर) बदि की दितवार के दिन। महा रा जी श्री पुरण मलजी की बहुजी सोलंकणी जी कुआ की..... आरंभ कियो सं(वत्) 1749 सा काम .....बहसपतवार का ..... पाखाण कूप ..... त्रप थत्र कलणमस्तु (कल्याणमस्तु) .....भम सत्य .....।।''[11]

शेखावतजी द्वारा प्रस्तुत कूप लेख का आशय यह है कि सम्वत् 1747 के मंगसर बदी रविवार के दिन महाराज पूरणमलजी की बहू सोलंकणीजी ने कुएं के निर्माण का कार्य आरम्भ कराया। सम्वत् 1749 गुरूवार के दिन कार्य समाप्त हुआ। जिसकी स्मृति में यह पाषाण लेख खुदवाया गया।

2. शेखावाटी की बावड़ियों पर लगे लेख

बावड़ी शेखावाटी क्षेत्र की ऐतिहासिक जल स्थापत्य की अमूल्य धरोहर है। वर्तमान में इनकी संख्या 50 से अधिक है। रैवासा, पाटन, झुन्झुनूं व खण्डेला बावड़ियों के कस्बे, नगर व शहर के रूप में विख्यात हैं। खण्डेला क्षेत्र में किसी समय 52 बावड़ियां होने के कारण यह क्षेत्र ***बावन बावड़ियों का खण्डेला*** कहलाता था।[12] यहां स्थित पांच बावड़ियों पर लेख प्राप्त हुए हैं। जिनमें तत्कालीन शासन, निर्माता, निर्माणकाल व इनसे जुड़े कारीगर वर्ग के बारे में भी जानकारी प्राप्त होती है। यहां यह स्मरणीय है कि पांच बावड़ियों में से चार का निर्माण नारी शक्ति द्वारा किया गया है। इन बावड़ियों का कालक्रम के अनुसार विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है जो निम्नवत् है–

2.1 सोनगरी बावड़ी का लेख– निरबाण शासकों के काल में बनी सोनगरी बावड़ी खण्डेला शहर के दक्षिण में बाहर की ओर गोपालसिंह खण्डेला के फार्म हाउस में स्थित है। इस बावड़ी के तले की चट्टान पर एक ग्यारह पंक्तियों वाला लेख अंकित है। यद्यपि लेख सुपाठ्य नहीं है फिर भी उस पाठ को जितना पढ़ा जा सका है वह इस प्रकार है–

> ''रामजी लिखतु कपूरचन्द राघोदास का संवत् 1541 सा का स्वामी लबादास राम का पीरोत..... केभोराये सोनगरी की वाय ..... सेवा दास की बाई पीपी जासु बाजो कपूर.....'' मिती सावण सुदी 4 बुधवार।[13]

इस लेख से इतना अवश्य स्पष्ट है कि इस कलात्मक बावड़ी का निर्माण विक्रम संवत् 1541 में हुआ। खण्डेले के शासक राजा रायसल की छठी पत्नी का नाम भी सोनगरी था। वह पाली के ठाकुर मानसिंह की पुत्री और प्रसिद्ध

---

[10] झाझड़, सुरजनसिंह, शेखावत, द्वितीय संशोधित संस्करण, 2009 : शेखावत राजा रायसल दरबारी, राजस्थानी ग्रन्थागार, सोजती गेट, जोधपुर (राज.), पृ. सं. 17–18।

[11] शेखावत, सुरजनसिंह, शेखावाटी के शिलालेख–एक अध्ययन, पृ. सं. 82–83।

[12] खण्डेला के भूदा के बास के निवासी सीतारामजी सैनी व खण्डेला के ही वार्ड नं. 1 के निवासी रमेशजी स्वामी ने जैसा मुझे सादर भेंट के दौरान बताया।

[13] श्री सौभाग्यसिंह शेखावत भगतपुरा द्वारा पठित पाठ के अनुसार।

राव अखैराज सोनगरा की पौत्री थी। खण्डेला में स्थित इस बावड़ी को लोग राजा रायसल की सोनगरी राणी द्वारा निर्मित मानने लगे। तथापि यहां पर यही मान्यता सही मानी जाती है जो लेख के विपरीत है।[14]

2.2 कालीबाय बावड़ी का शिलालेख– खण्डेला से दक्षिण दिशा में 1.5 किलोमीटर की दूरी पर पलसाना जाने वाले प्रमुख मार्ग पर कालीबाय नाम से प्रसिद्ध बावड़ी है। जिसकी दीवार में एक शिलालेख संलग्न है। पं. झागरमल शर्मा के अनुसार इस लेख का आशय इस प्रकार है–

> ''सम्वत् 1575 फागुण सुदी 13 को अग्रवाल गर्गगोती कोल्हा के पुत्र प्रथीराज, उसके पुत्र रामा और बाल्हा ने इस बावड़ी का निर्माण कार्य शुरू किया। तब खण्डेला का शासक रावत नाथूदेव निरबाण था और दिल्ली पर सुल्तान इब्राहिम लोदी राज्य करता था। उक्त निर्माण कार्य वि. सं. 1592 की जेठ सुदी में पूरा हुआ, तब दिल्ली पर मिरजा हुमायूं मुगल का राज्य था।''[15]

खण्डेला के निरबाण शासकों के इतिहास निर्माण के लिए यह शिलालेख अति महत्वपूर्ण है। इसी लेख से निरबाण शासक नाथूदेव, उसका समय तथा उसकी उपाधि के बारे में प्रामाणिक जानकारी प्राप्त होती है। इस लेख से उस काल दिल्ली में हुए सत्ता परिवर्तन पर भी आंशिक प्रकाश पड़ता है। इस लेख के अनुसार वि. सं. 1575 में दिल्ली पर सुल्तान इब्राहिम लोदी पठान का राज्य था। मुगल बादशाह बाबर ने काबुल विजय के पश्चात् वि. सं. 1585 में भारत पर आक्रमण किया। पानीपत के मैदान में बाबर ने इब्राहिम लोदी को मारकर दिल्ली पर अधिकार किया। परन्तु दो वर्ष बाद ही वह मृत्यु को प्राप्त हो गया। वि. सं. 1587 में उसका पुत्र मिरजा हुमायूं दिल्ली का बादशाह बना। वि. सं. 1592 में खण्डेला में जब यह कालीबाय बन कर तैयार हुई, तब मिरज़ा हुमायूं दिल्ली पर शासन कर रहा था।

2.3 बाय (बावड़ी) संवराई का लेख– यह लेख वर्तमान में डॉ. रायसलजी के फार्म हाउस में अवस्थित माजी सा की बावड़ी पर लगा हुआ था। जिसे बावड़ी की मरम्मत के दौरान हटा दिया गया। इस लेख का मूल पाठ मान्यवर सुरजन सिंह शेखावत ने इस प्रकार प्रस्तुत किया है–

> ''महाराजा श्री राजाजी द्वारकादासजी की राणी बहूजी श्री जोधपुरीजी महाराज श्री बिजैचन्दजी की मां बाय संवराई। संवत् 1729 का मिति आसोज सुदी 10 बाय पुरी करी। चेजारो खींवलो सो काम कियो।''[16]

यह लेख इस बावड़ी के जीर्णोद्धार से सम्बन्धित है। इसलिए इतना तो तय है कि यह बावड़ी पूर्व में बनी हुई थी। लेख के विवरण के अनुसार खण्डेला के महाराजा द्वारकादास की राणी जोधपुरीजी जो विजयसिंह की मां है। इन्होंने विक्रम संवत् 1729 आसोज शुक्ला 10 को इस बावड़ी का जीर्णोद्धार कराया। मरम्मत का काम खींवा चेजारा ने किया।

राजा द्वारकादास वि. सं. 1687 में बादशाह शाहजहां की सेना के अग्रभाग में रहकर विद्रोही उमराव खानेजहां लोदी से युद्ध करते हुए वीर गति को प्राप्त हुए थे।[17] राजा द्वारकादास के युद्ध में वीरगति प्राप्त करने के 42 वर्ष बाद

---

[14] झाझड़, सुरजनसिंह, शेखावत, शेखावत राजा रायसल दरबारी, पृ. सं. 62।

[15] शेखावत, सुरजनसिंह, शेखावाटी के शिलालेख–एक अध्ययन, पृ. सं. 61–62।

[16] वहीः पृ. सं. 79–80।

[17] शेखावत, सुरजनसिंह, ठाकुर, द्वितीय संशोधित संस्करण, 2009 : गिरधर वंश प्रकाश खण्डेला का वृहद् इतिहास एवं शेखावातों की वंशावली, पृ. सं. 68–69

इस बावड़ी का जीर्णोद्धार करवाया गया। बावड़ी के इस लेख से ज्ञात होता है कि राजा द्वारकादास के कनिष्ठ पुत्र विजयसिंह का जन्म इसी राणी जोधपुरीजी के गर्भ से हुआ था। यहां यह भी स्मरणीय है कि यह पहला अवसर है जहां निर्माता के साथ स्वतन्त्र रूप से खींवा चेजारा जैसे कामगार का नाम उत्कीर्ण हुआ है।

2.4 बहूजी की बावड़ी का लेख– यह बावड़ी माजी सा की बावड़ी से थोड़ी सी दूरी पर उत्तर दिशा की तरफ एक सैनी परिवार के खेत में स्थित है। यद्यपि बावड़ी छोटी है परन्तु इसमें अवस्थित शिलालेख इसे ऐतिहासिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण बना देता है। ग्यारह पंक्तियों वाले इस शिलालेख का मूल पाठ इस प्रकार है–

> ''सीधी श्री महाराज श्री बहादरसींघजी की राणी बहूजी श्री गौड़ी राजा श्री स्योरामजी की बेटी राजा श्री केसरी संघजी फतेसंघजी की मा वाय कराई पुरी हुई ..... अखैराम गोकल दास का पोतदा दरोगो मीयां दोला खां सलेमान का बेटा चेजारो धरमु पीथा का बेटा लीखतं हरिनाथ रामदास का संवतु १७४९ का मीती आसोज सुधी १० श्री यादेसती पातीसाह .... ।''[18]

प्रस्तुत लेख के अनुसार खण्डेला के महाराज बहादुर सिंह की गौड़ राणी जो सरवाड़ (अजमेर) के राजा शिवरामजी गौड़ की बेटी व राजा केशरीसिंह तथा फतेहसिंह की माता ने इस बावड़ी का निर्माण करवाया। इस बावड़ी का निर्माण कार्य दरोगा गोकुलदास के पोते अखैराम तथा सुलेमान के बेटे मियां दौलाखां की देखरेख में हुआ था। पीथा के पुत्र चेजारा धरमा ने निर्माण कार्य किया था। यह लेख संवत् 1749 आसोज सुदी 10 को अंकित करवाया गया जिसे रामदास के हरिनाथ ने लिखा।

बावड़ी के इस लेख से कई इतिहास विषयक तथ्यों पर प्रकाश पड़ता है। प्रथम, खण्डेले के राजा केशरीसिंह तथा इनके अनुज भ्राता फतेहसिंह राणी गौड़जी के पुत्र थे। द्वितीय, लेख में उल्लिखित गौड़ी राणी सरवाड़ (अजमेर) के शासक राजा शिवराम गौड़ की पुत्री थी। राजा शिवराम गौड़ बादशाह शाहजहां की सेवा में 2000 जात व 1500 सवार का मनसबदार था। जो शामूगढ़ के युद्ध (वि. सं. 1715) में बादशाह के पक्ष में विद्रोही शहजादों से युद्ध करता हुआ मारा गया था।[19] तृतीय, यह दूसरा अवसर है कि शासक के हरम में कार्य करने वालों व चेजारे का उसके पिता सहित नाम का उल्लेख किया गया है।

3. शेखावाटी के जोहड़ व तालाबों पर लगे लेख

शेखावाटी क्षेत्र के जोहड़ ऐतिहासिक जल स्थापत्य की विश्व की अद्वितीय रचना है। जिस पर इनके निर्माता व निर्माण वर्ष के साथ ही विभिन्न ऐतिहासिक व सांस्कुतिक सम्बन्धों पर यथेष्ट प्रकाश डालने वाले लघु शिलाफलक लेख मिलते हैं। जिनका शोधपरक विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है।

3.1 रामगढ़–शेखावाटी स्थित अणतरामजी के जोहड़ का लेख– सीकर ज़िले के अंतिम छोर उत्तरी–पश्चिम में एक कस्बा रामगढ़ है। कस्बे के मध्य में अणतराम का जोहड़ है जिस पर दो शिलालेख लगे हैं। यद्यपि जोहड़ के प्रवेश–द्वार को तोरण का आकार देने के उद्देश्य से इस पर लोहे की चादर का तोरण लगवाकर उस पर इसके निर्माता का नाम मोटे अक्षरों में पेंट से लिखवाया गया है। मूल रूप से इस शिलालेख के दो ही भाग हैं जो आपस में प्रवेश–द्वार के दोनों कोनों पर स्थित हैं।

---

[18] परिमार्गण के दौरान उक्त बावड़ी के शिलालेख को मैंने स्वयं देखकर इसके मूल पाठ को जैसा मैं पढ़ पाया उसी को यहां प्रस्तुत किया गया है।

[19] शेखावत, सुरजनसिंह, ठाकुर, गिरधर वंश प्रकाश खण्डेला का वृहद् इतिहास....., पृ. सं. 104।

3.1.1 बांया भाग– यह जोहड़ का मूल शिलालेख है जो संगमरमर के पत्थर पर लिखा गया है। इस लेख का उवाच्चय इस प्रकार है– ''सेठ श्री अणतरामजी पौद्दार ने यह जोहड़ा सन 1845 में बनवाया था। इसका जीर्णोद्धार सन 2011 में सेठ तुलानन्दन कैलाशपति जी पौद्दार की स्मृति में उनके वंशजों द्वारा पर्यावरण प्रहरी नागरिक नागरिक समिति के माध्यम से किया गया। प्रेरक– अम्बिका प्रसाद दाधिच''[20]

3.1.2 दांया भाग– यह शिलालेख काले ग्रेनाइट पत्थर पर नगरपालिका द्वारा जोहड़ पर लगाई गई हाई मास्क लाइट व उसके रखराव के संदर्भ में खुदवाकर लगाया गया है। लेख का पाठ इस प्रकार है– ''कार्य का नाम . हाई मास्क लाइट कार्यादेश राशि दृ 380000 कार्य शुरू दिनांक . 11.5.2015 कार्यपूर्ण दिनांक . 15.08.2015 संवेदक का नाम . ट्विंकल एजेन्सीज सीकर दूरभाष संख्या दृ 9828570611 गारंटी अवधि . 2 वर्ष कनिष्ठ अभियन्ता रियाज अहमद (सीताराम) अधिशाषी अधिकारी नगर पालिका रामगढ़ तथा (मुज्जामिल भाटी) अध्यक्ष नगर पालिका रामगढ़।''[21]

3.2 फ़तेहपुर स्थित घड़वा जोहड़ का लेख– फ़तेहपुर–शेखावाटी ज़िला मुख्यालय सीकर से 50 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। फ़तेहपुर नगर व इसकी नवाबी की नींव रखने वाले प्रथम नवाब फ़तेहखां थे। इन्होंने सन् 1449 ई. में फतेहपुर किले का निर्माण प्रारम्भ किया व वि. सं. 1508 सन् 1451 में किले में प्रवेश कर शहर को आबाद करके अपने नाम से फ़तेहपुर नाम रखा तथा चैत्र शुक्ला 5 के दिन से उसने अपने आपको फ़तेहपुर का विधिवत् शासक घोषित किया।[22]

फ़तेहपुर के अंतिम नवाब कामयाबखां को 1730 ई. में सीकर के राव शिवसिंह ने झुन्झुनूं के शासक शार्दुलसिंह के साथ मिलकर हरा दिया तथा 1731 ई. में फ़तेहपुर पर अधिकार कर लिया।[23] शेखावाटी की दूसरी नवाबी फ़तेहपुर कस्बे में जल धरोहर का प्रचुर मात्रा में निर्माण हुआ है। जिसमें एक बावड़ी सहित पांच जोहड़ विद्यमान हैं। इन जोहड़ों में नगरपालिका कार्यालय के सामने स्थित शहर का प्रसिद्ध घड़वा जोहड़ स्थित है। जिसके पश्चिमी की ओर स्थित प्रवेश–द्वार पर चोकोर संगमरमर पत्थर का लघु शिलाफलक लेख लगा है। मूल लेख का पाठ इस प्रकार है–

> ''।।श्री।। यह जोड़ा सेठ गुलराजजी जगन्नाथ सिंहानिया, महानन्दरायजी, रघुनाथराय देवड़ा (फ़तेहपुर) और अणतरामजी पोद्दार (रामगढ़) ने बनवाया सं. १९११ वि.।''[24]

3.3 चिड़ावा स्थित भगीनिया जोहड़ का लेख– यह जोहड़ चिड़ावा शहर के उत्तर–पश्चिम में पिलानी मार्ग पर एक बीहड़ में स्थित है। जिसे चिड़ावा में भगीनिया जोहड़ा या बावलिया बाबा का जोहड़ा कहा जाता है। इस जोहड़ पर निर्माण के नाम पर केवल एक घाट बना हुआ है। परन्तु चर्च के आकार का इसके शीर्ष पर बना गुम्बज इसे अन्य

---

[20] अनुसंधान यात्रा के दौरान स्वयं के प्रत्यक्ष अध्ययन एवं अनुभव के आधार पर।
[21] पूर्वोक्त ही।
[22] दिनमणि, श्रीगोपाल, पूर्वोक्त ही, पृ. सं. 19–20
[23] पूर्वोक्त ही।
[24] अनुसंधान यात्रा के दौरान स्वयं के प्रत्यक्ष अध्ययन एवं अनुभव के आधार पर।

जोहड़ों के स्थापत्य से अलग करता है। तीन प्रवेश–द्वारों के मध्य के द्वार पर एक लघु प्रस्तर लेख लगा हुआ है। जिसका पाठ निम्न प्रकार है–

''।। श्रीरामजी।। गणेश नारायण घाट परम हंस पंडित श्रीगणेश नारायण जी की आज्ञानुसार यह श्री श्री.....देवदास महेश्वरी बिड़ला ने निर्माण किया मिति फाल्गुन कृष्णा १ संवत् १८५८।''[25]

3.4 पौंख स्थित हरिनारायणजी के तालाब का लेख– निरबाणकालीन शेखावाटी में पौंख एक प्रमुख ठिकाना था। गांव के तीन ओर पहाड़ियां हैं। इसके उत्तर दिशा में मैदानी भाग होने के कारण कृषि योग्य भूमि है जिसे ***ढ़हर***[26] कहा जाता है। शेखावत काल में यह गांव जुझारसिंह के तीसरे पुत्र भगवंतसिंह को जागीर के रूप में मिला था। यद्यपि भगवंतसिंह अपनी जागीर का हिस्सा लेकर भी गुढ़ा में ही रहते थे। बाद में भगवंतसिंह के चार पुत्रों तेजसिंह, फतेहसिंह, दौलतसिंह व दानसिंह को यह गांव जागीर के रूप में प्राप्त हुआ था।[27] इस गांव के ढ़हर में दो पक्के तालाब स्थित है। इनमें से पहले तालाब पर इसकी तिबारी के प्रवेश–द्वार पर एक शिलाफलक जड़ा हुआ है। इस लेख का पाठ इस प्रकार है–

''.....जे. शु. १५ श्रीः यह तालाब बनाया जोसीजी हेमराजजी कांमें बालकिशनजी का दोहिता पं. हरिनारायणजी पं. रामप्रतापजी का पुत्र मु. परशुरामपुरा।''[28]

इस तालाब पर लगे लेख में इसके निर्माण की तिथि पठनीय नहीं है। परन्तु इसकी बनावट के आधार पर कहा जा सकता है कि यह अन्य प्रमुख तालाबों की भांति छपनिया अकाल के दौरान ही निर्मित हुआ है। इसका निर्माण जोशी परिवार में हेमराजजी के वंशज बालकिशनजी की पुत्री के पुत्र पं. हरिनारायण ने करवाया था। बालकिशनजी की पुत्री का विवाह परसरामपुरा के पं. रामप्रतापजी के साथ हुआ था।

3.5 खेतड़ी स्थित पन्नालाल शाह के तालाब का लेख– खेतड़ी ज़िला मुख्यालय झुन्झुनूं से 56 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। जिसकी स्थापना शार्दुलसिंह के पौत्र व किशनसिंह के पुत्र भोपालसिंह ने विक्रमी संवत् 1812 में खेतसिंह की ढ़ाणी के स्थान पर बसाना प्रारम्भ किया और अपने नाम से पहाड़ी पर भोपालगढ़ बनवाया। विक्रम संवत् 1814 में भोपालसिंह ने खेतड़ी को राजधानी का गौरव प्रदान किया।[29] पश्चात् काल में खेतड़ी कस्बे में जल धरोहर के सर्वाधिक जल स्थापत्यों का निर्माण हुआ जिनके आधार पर खेतड़ी कस्बे को शेखावाटी की जल धरोहर नगरी का गौरव प्रदान किया जा सकता है। इसी जल धरोहर का एक प्रतिमान व खेतड़ी के साथ ही सम्पूर्ण राजपूताने की शान के रूप में पन्नालाल शाह का तालाब खेतड़ी शहर के मध्य में स्थित है। यह तालाब राष्ट्रीय स्तर की जल विरासत से साम्यता रखता है। यह अत्यन्त विशाल व भारी भरकम निर्माण का राजस्थान का अद्वितीय तालाब है। जिसके निर्माता पन्नालाल शाह है। इस तालाब के पूर्वी प्रवेश–द्वार व दक्षिण–पूर्वी गलियारे के बाहर दो शिलाफलक लेख लगे हैं। जिन पर तालाब के निर्माणकाल व स्वामी विवेकानन्द के सम्मान में आयोजित प्रीतिभोज व नगर में रोशनी करने की तिथि अंकित है। यहां यह स्मरणीय है कि स्वामी विवेकानन्दजी को अमेरिका के शहर शिकागो में

---

[25] पूर्वोक्त ही।

[26] अनुसंधान यात्रा के दौरान हमने इस क्षेत्र के बारे में पड़ताल की उस समय यहां की श्रीमती भगवती देवी गुजर ने इस मैदानी क्षेत्र को ढ़हर ही कहकर पुकारा था।

[27] राठौड़, मनोहरसिंह, 2004 : उदयपुरवाटी दिग्दर्शन, उदयपुरवाटी विकास स्मारिका प्रकाशन समिति, गुढ़ा गौड़जी (झुन्झुनूं), पृ. सं. 139

[28] अनुसंधान यात्रा के दौरान स्वयं के प्रत्यक्ष अध्ययन एवं अनुभव के आधार पर।

[29] शर्मा, झाबरमल्ल, संशोधित संस्करण, 2016 : खेतड़ी का इतिहास, राजस्थानी ग्रन्थागार, प्रथम माला, गणेश मन्दिर के सामने, सोजती गेट, जोधपुर (राजस्थान), पृ. सं. 34।

1893 ई. में हुए विश्व धर्म में भेजने का श्रेय खेतड़ी के महाराजा अजीतसिंह को ही था।[30] दोनों शिलाफलकों का विवरण निम्नानुसार है–

3.5.1 बांये भाग का शिलाफलक– ''यह पन्ना सर बाग कुआ दुकानें नोहरे आदि शाह हरिनारायणजी के पौत्र और नृसिंह दास जी के पुत्र सेठ पन्नालाल ने – संवत् १९२८ में बनवाया।''[31]

दांये भाग का शिलाफलक– "THIS TANK GARDEN WELL SHOPS NOHRA etc. WERE CONSTRUCTED BY SETH PANNA LAL SON OF SHAH NAR SINGH DASS AND SON OF SHAH HAR NARAIN IN SAMBAT 1928"[32]

3.5.2 यह लेख भी संगमरमर पत्थर पर लिपिबद्ध है। इसकी भाषा हिन्दी है जो तालाब के दक्षिण–पूर्वी गलियारों के उत्तर–पश्चिम के गलियारे के बाहरी दीवार पर लगा हुआ है। जिसका मूल पाठ इस प्रकार है– ''अमेरिका से लौटने के बाद खेतड़ी पधारने के उपलक्ष्य में इस स्थान पर स्वामी विवेकानन्द के स्वागतार्थ १२ दिसम्बर १८९७ ई. को विशाल राजकीय जलसा और प्रीतिभोज हुए भोपालगढ़ सहित नगर में सर्वत्र रोशनी की गई थी।''[33]

3.6 लक्ष्मणगढ़ स्थित गुमानीराजी के जोहड़ का कीर्ति स्तम्भ लेख– ज़िला मुख्यालय सीकर से 29 किलोमीटर की दूरी पर स्थित लक्ष्मणगढ़ की स्थापना सीकर के राव राजा लक्ष्मणसिंह ने की थी। इस कस्बे की स्थापना वि. सं. 1862 में बेड़ की पहाड़ी पर स्थित गढ़ की स्थापना के साथ ही मानी जाती है।[34] लक्ष्मणगढ़ शहर की परिधि के अहाते में श्री भगवानदास तोदी महाविद्यालय के पश्चिम में बालाजी मन्दिर से सटा हुआ एक पुराना जोहड़ स्थित है। जिसे स्थानीय लोग सेठों का जोहड़ के नाम से पुकारते हैं। इस जोहड़ के उत्तरी प्रवेश–द्वार के समीप ही बलुए पत्थर से बना एक कीर्ति स्तम्भ गड़ा हुआ है। इस स्तम्भ पर जोहड़ के निर्माणकाल, माह, तिथि, वर्ष, निर्माता के आध्यात्मिक देवी–देवता व इसके निर्माणकर्त्ता के नाम खुदे हुए हैं।

जहां तक मैं इस स्तम्भ के मूल पाठ को आत्मसात कर पाया हूं उसके अनुसार इस जोहड़ (स्तम्भ लेख में बावड़ी नाम आया है।) का निर्माण 19वीं सदी के छपनिया अकाल के दौरान हुआ है। मार्गशीष माह के दूसरे पखवाड़े की षष्टी के गुरूवार के दिन भगवान शंकर पार्वती को समर्पित इस जोहड़ का निर्माण सेठ गुमानी राम कन्हैया लाल ने करवाया। कीर्ति स्तम्भ का मूल लेख निम्नानुसार है–

''श्री गणेशाय नमः संवत् १८९९ शिव से २६४ मंगसर सुदी ६ बृहस्पतवार के दिन शिवसागर गौरी शंकर जी बावड़ी कराई सेठ गुमानी राम कन्हैया लाल।''[35]

3.7 सीकर स्थित माधवसागर तालाब का लेख– सीकर शहर की स्थापना दौलतसिंह ने विक्रम संवत् 1744, ईस्वीं सन् 1687 में की थी। इसी समय उन्होंने अपने झोंपड़े बनवाये तथा अपने आराध्य देव मोहनलालजी के लिए सुन्दर मन्दिर का निर्माण करवाया था। इस समय यहां एक मात्र ***खारिया कुआं*** था जिसे ***पुतलियों का कुआं*** भी कहा

---

[30] आर्य, एच. एस., पूर्वोक्त ही, पृ. सं. 39।
[31] प्रत्यक्ष अध्ययन एवं अनुभव के आधार पर।
[32] पूवोक्त ही।
[33] अनुसंधान यात्रा के दौरान स्वयं के प्रत्यक्ष अध्ययन एवं अनुभव के आधार पर।
[34] लक्ष्मणगढ़ शहर में स्थित शारदा सदन पुस्तकालय द्वारा सम्पादित नैवेद्यम (शताब्दी ग्रन्थ) में प्रकाशित पं. नन्द कुमार शास्त्री के लेख के अनुसार।
[35] प्रत्यक्ष अध्ययन एवं अनुभव के आधार पर।

जाता है।[36] दौलतसिंह के वंशक्रम में सीकर के दशवें शासक के रूप में राव राजा माधवसिंह बहादुर चैत्र शुक्ल 7 संवत् 1923 को गद्दी पर बैठे। इनके समय पड़े संवत् 1956 के छपनिया अकाल के दौरान इन्होंने दुर्भिक्ष पीड़ित जनता की बड़ी सहायता की थी। उसी समय के दुर्दिनों में सीकर शहर के दक्षिण में वर्तमान श्री हरदयाल संग्रहालय के समीप इन्होंने अपने नाम से माधवसागर तालाब का निर्माण करवाया।[37] राजस्थान निर्माण के बाद इस तालाब का जीर्णोद्धार तत्कालीन राव राणी साहिबा के द्वारा पूर्व दिशा में एक अतिरिक्त घाट बनवाकर किया गया। इस जनाना घाट के प्रवेश–द्वार के भीतरी भाग में संगमरमर पत्थर पर उत्कीर्ण लेख लगा हुआ है। जिसका अक्षरशः विवरण निम्नानुसार है–

> "ॐयतो धर्मस्ततो जय: राजकीय मुहर सीकर राजस्थान माधव सागर तालाब के रमणीक तट पर स्त्री समाज के आवश्यक अभाव की पूर्ति करने के लिये यह जनाना घाट श्रीमती राव राणी श्री जोधी जी साहिबा ने अपने जीवन यज्ञ के अवसर पर बनवाया। मिति वैशाख शुक्ला पूर्णिमा सोमवार संवत् २०१४ दिनांक १३ मई १९५७।"[38]

4. शेखावाटी के बंधों पर लगे लेख

शेखावाटी के पहाड़ी क्षेत्र में वर्षा के पानी को रोककर सिंचाई हेतु शासक वर्ग द्वारा बांध या बंधे और एनिकटों का निर्माण करवाया गया। शेखावाटी में कुछ बड़े स्तर पर भी बांध बने जो ऐतिहासिक दृष्टिकोण से बड़े महत्व के हैं। इस प्रकार के बांधो में खेतड़ी स्थित अजीतसागर बांध, कोट का बांध व सलेदीपुर के बांध प्रमुख है। इन बांधो में अजीतसागर व सलेदीपुर के बांधो पर शिलालेख लगे हुए हैं। जिनका विवरण इस प्रकार है–

4.1 सलेदीपुर के बंधे का लेख– सलेदीपुरा का बंधा खण्डेला शहर से तीन किलोमीटर की दूरी पर उत्तर दिशा में स्थित सलेदीपुरा ग्राम में स्थित है। इस बंधे पर बने तिबारे में संगमरमर पत्थर का एक बड़ा शिलालेख लगा हुआ है। जिस पर इस बांध के निर्माता द्वारा दोहों के रूप में डिंगल भाषा में सोरठे लिखवाये गये हैं। शिलालेख का पाठ यहां उद्धृत किया जा रहा है। जो इस प्रकार है–

।। श्री ।।

दोहा– सोढ दुल्ह का किलहणू जाम्हड़ पजुन मलेस
बीजल राजल कीलहणा कूं तिलजूणा नरेस १।। सोरठा
उदैकरणा बालो ह मोकल सेखो रायमल सूजोराय
सलोह गिरधर द्वारिकदास गिणा २।। बरसिंध बहा
दरेस फतो धीर गज इद्रसी पातिल लछो अखेसपा
टजेणा जसवंत नृप ३।। तनय तीन हुवता सजे पदमू
रणाजित सजन बसि अप्रज दिवबास बड़ दहू राजसि
बिलसि ४।। जणां पाट सजनेस तेणा कुँवर जयसिंह
तिम भंवर पुन्यरो भेस संतत चिर संग्रामसी ३४।।५।।

---

[36] सीकर समाचार के दीपावली विशेषांक 2007 में महावीर पुरोहित की सीकर जनपद की अपनी कहानी के रूप में सीकर की आत्म–कथा, पृ. सं. 8।

[37] शर्मा, झाबरमल्ल, संशोधित संस्करण, 2015 : सीकर का इतिहास, राजस्थानी ग्रन्थागार, प्रथम माला, गणेश मन्दिर के सामने, सोजती गेट, जोधपुर (राजस्थान), पृ. सं. 76।

[38] अनुसंधान यात्रा के दौरान स्वयं के प्रत्यक्ष अध्ययन एवं अनुभव के आधार पर।

दोहा बसुन वब सुससि १८९८ अब्दबिचि किलखंडे लाकंत पंचमि भाद्रव सुल्क पख जन्मल ह्योज संवत ६।। दिसा अंक बिधु १९१० अब्द मैसु पहुबन्यो द्रढ़ संघ सत उनईस बतीस सुक बनवायो यह बंध ७।। ततर चित प्रिय जा नितस सज्जनसिंह नरेस ता के जीर्णोद्वार हित बसु कीन्हो ब्यय बेस ८।। मिति फागण बदी २ संवत १८६८ का[39]

प्रस्तुत लेख में कुल 34 शासकों के नाम उनके क्रम के अनुसार संख्या सहित उत्कीर्ण किए गए हैं। प्रथम दोहे में नरवर के कच्छवाहा नरेश सोढ़देव व उनके पुत्र दुल्हराय (जिन्होंने राजस्थान में कच्छवाहा राज्य की स्थापना की थी।) से लेकर कांकलजी, हणूतदेवजी, जान्हणजी, पंजवनरायजी, मलयसिंहजी, बीजलदेवजी, राजदेवजी, कीलहणदेवजी, कुन्तलजी, जूणजी सहित बारह नरेशों के नाम उत्कीर्ण है।

द्वितीय श्लोक में आमेर के उदयकरणजी के तीसरे पुत्र बालाजी से मोकलजी, शेखाजी, रायमलजी, सूजाजी, रायसलजी, गिरधरदास व द्वारकादास सहित नौ शासकों के नाम लिखे हुये हैं। तृतीय श्लोक में वरसिंहदेव, बहादुरसिंह, फतेहसिंह, धीरजसिंह, गजसिंह, इन्द्रसिंह, प्रतापसिंह, लिछमणसिंह, अक्षयसिंह, जसवंतसिंह जैसे नरेशों के नाम खुदे हुये हैं।

चतुर्थ श्लोक में पदमसिंह, रणजीतसिंह व सज्जनसिंह का उल्लेख हुआ है। जो जसवंतसिंह के पुत्र थे। पांचवे श्लोक में राजा सज्जनसिंह के पुत्र जयसिंह व उनके पुत्र संग्रामसिंह का नाम अंकित है। छठे से आठवें श्लोक में इस बांध के निर्माण व जीर्णोद्धार के सम्बन्ध में विभिन्न तिथियों, वर्षों व इनसे सम्बद्ध शासकों के नाम अंकित है। छठे श्लोक में उल्लिखित विक्रमीं संवत् वर्ष १८९८ के कालखण्ड में भादवा की कृष्ण पंचमी को इस होज का जन्म हुआ। सातवें श्लोक में एक विक्रमीं वर्ष १९१० व सन् उन्नीस से बत्तीस में इस बांध के सूखने पर बनवाने का अंकन हुआ है। आठवें श्लोक में मिति फागण बदी २ संवत १८६८ को तत्कालीन हृदयप्रिय राजा सज्जनसिंह द्वारा अपने खर्चे पर इस बांध का जीर्णोद्धार करवाने का उल्लेख हुआ है।

4.2 खेतड़ी स्थित बांध व झीलों पर लगे लेख– संवत् 1814 में भोपालसिंह द्वारा खेतड़ी नगर की स्थापना की गई। यहां के राजा अजीतसिंह ने पहाड़ों से बहने वाले पानी को जनहित में काम में लेने के उद्देश्य से चार छोटे बड़े बांध बनवाये। जो अजीत सागर, अजीत समन्द, बन्ध रेखा और बन्ध बेरी के नाम से जाने जाते हैं। इन बांधों में अजीत समन्द एक मीठे पानी की झील है। अजीत सागर व अजीत समन्द झील पर 19वीं सदी ई. के अन्तिम दशक में खेतड़ी नरेश ने बांध बनवा कर प्रजाहित के लिए अनूठा उदाहरण प्रस्तुत किया। इन दोनों जल स्थापत्य की विशाल धरोहरों पर संगमरमर पत्थर के शिलालेख भी लगे हैं। जो इन धरोहर के निर्माण से जुड़े विभिन्न ऐतिहासिक तथ्यों पर प्रकाश डालते हैं।

4.2.1 अजीत सागर बांध– इस बांध पर स्थित एक शिवालय पर लगे एक शिलालेख के पाठ के अनुसार इस बांध का निर्माण ताम्र नगरी खेतड़ी के राजा अजीतसिंह बहादुर ने करवाया। इसका शिलान्यास राजपूताना के जी.एस.

[39] अनुसंधान यात्रा के दौरान स्वयं द्वारा संकलन।

आई. एजेन्ट टू द् गवर्नर जनरल कर्नल सी.के.एम. वाल्टर ने 19 जनवरी, 1889 को व इस बांध का उद्घाटन जयपुर राज्य के रेजीडेन्ट कर्नल एच.पी. पीकाक ने 30 सितम्बर, 1891 के दिन इसका पानी जनता के लिए खोला था। इस बांध का निर्माण राय साहिब बहादुर के निजी सचिव पंडित कन्हैयालाल की देखरेख में आए 86,394 रूपयों की लागत से हुआ था। लेख के अनुसार इसका निर्माण कार्य 31 सितम्बर, 1891 को समाप्त हुआ था।[40] इस बांध के निर्माण से खेतड़ी क्षेत्र की जनता ने पानी के अभाव से बड़ी राहत महसूस की और इसके निर्माता अजीतसिंह का नाम शेखावाटी की जल धरोहर निर्माण के बड़े योद्धाओं की सूची में सम्मिलित हो गया। इस बांध पर लगे शिलालेख का मूल पाठ यहां प्रस्तुत किया जा रहा है। जो निम्नवत् है–

बन्ध अजित सागर

यह बन्ध श्री मान् राजा अजित सिंह जी बहादुर रईस खेतड़ी ने भारत वर्ष की राज राजेश्वरी परम अनुग्रहिणी श्री मति महारानी त्रिकुर्टाभ्या के शुभ राज्य के ..... वर्ष की प्राप्ति के ..... के दिन के निमित्त में अपनी प्रजा के हितार्थ बनाया। श्री युत्त कर्नल सी.के.एम. वाल्टर साहिब बहादुर जी.एस.आई. एजेन्ट गवर्नर जनरल राजपूताना ने इस की नींव का पत्थर ..... १६ जनवरी सन् १८८६ ई. को अपने हाथ से .... कर्नल एच. पी. पीकाक साहिब बहादुर रेजीडेन्ट जयपुर ने ३०। सितम्बर सन् १८९१ ई. को बन्ध की मोरी जनपर्जा के निमित्त खोली।।

यह काम राय साहिब बहादुर के प्राईवेट सेकेटरी पण्डित कन्हैयालाल की श्रमदान में आया ८६,३९४ में बना जो तारीख ३१ सितम्बर सन् १८९१ ई. को समाप्त हुआ।।[41]

4.2.2 अजीत समन्द झील– इस झील के किनारे कस्बा खेतड़ी के राजा अजीतसिंह बहादुर ने जनता के कल्याण हेतु एक बांध का निर्माण करवाया। इस झील पर अवस्थित शिलालेख के अनुसार 21 जनवरी, 1892 को राजपूताना राज्य के जी.एस.आई. एजेन्ट टू द् गवर्नर जनरल कर्नल जी.एच. ट्रेवर ने इस बांध की नींव का पहला पत्थर रखा। जो 31 मार्च, 1894 ई. में पूरा हुआ। इस बांध पर 38,000 रूपये खर्च हुए।[42] इस बांध का निर्माण भी अजीत सागर बांध की भांति राजा साहब बहादुर के निजी सचिव पण्डित कन्हैया लाल की देखरेख में ही हुआ। खेतड़ी क्षेत्र में बांधों के

---

[40] आर्य, एच. एस., द्वितीय संस्करण, 2013 : शेखावाटी का राजनैतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, पंचशील प्रकाशन, फिल्म कॉलोनी, जयपुर, पृ. सं. 39।

[41] अनुसंधान यात्रा के दौरान स्वयं द्वारा संकलन।

[42] आर्य, एच. एस., पूर्वोक्त् ही, पृ. सं. 39।

निर्माण में राजा साहब अजीतसिंह बहादुर की बड़ी सफलता थी। जो उन्हें शेखावाटी क्षेत्र में ***जल नरेश*** की संज्ञा से विभूषित करती है। इस बांध पर अवस्थित शिलालेख का मूल पाठ यहां उद्धृत किया जा रहा है जो इस प्रकार है–

BANDH AJIT SAMANDH.

This Bandh was built by Raja Ajit Singh Bahadur, of Khetri,
for the benefit of the people of the Town of Khetri.
Colonel G.H.TREVOR, G.S.I., Agent to the Governor General
for Rajputana. laid the foundation-stone on 21st January, 1892.
The work was carried out under the supervision of Pandit
Kanhaiya Lall, Private Secretary to the Raja Saheb Baha
dur, and completed on 31st March, 1894, at a cost of Rs. 38000.[43]

प्रस्तुत विवरण शेखावाटी क्षेत्र की केवल जल धरोहर पर लगे शिलालेखों एवं उस स्थान विशेष के इतिहास की शोधपरक जानकारी प्रस्तुत करने का प्रयास है। इसके अतिरिक्त इस क्षेत्र में ओर भी अनेक शिलालेख है जिनसे शेखावाटी के इतिहास पर पर्याप्त जानकारी जुटाई जा सकती है।

****

[43] अनुसंधान यात्रा के दौरान स्वयं द्वारा संकलन।